मंथन क्रमांक –2 बेरोजगारी

व्यक्ति को रोजगार प्राप्त कराना राज्य का स्वैच्छिक कर्तव्य होता है,दायित्व नहीं। क्योंकि रोजगार व्यक्ति का मौलिक अधिकार नहीं होता,बल्कि संवैधानिक अधिकार मात्र होता है। रोजगार की स्वतंत्रता व्यक्ति का मौलिक अधिकार होता है। हमारे संविधान विशेषज्ञों की नासमझी के कारण कभी कभी रोजगार को मौलिक अधिकार कह कर संविधान में शामिल कर लिया जाता है।

रोजगार देना राज्य का दायित्व न होते हुए भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मानी जाती है। क्योंकि मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के अभाव में व्यक्ति कभी कभी अपराध करने को मजबूर हो जाता है। ऐसे अपराध राज्य के लिए समस्या पैदा करते है। इसलिए राज्य का महत्वपूर्ण कार्य है कि वह अभावग्रस्त लोगों की मजबूरी को दूर करे। ऐसी मजबूरी यदि मुफ्त में बांटकर दूर की जायेगी तो वह एक नई समस्या पैदा करेगी। इसलिए राज्य बेरोजगारी को एक समस्या मानकर उसे दूर करने का प्रयास करता है।

पिछले कई सौ वर्षो से समाज व्यवस्था पर बुद्धिजीवियों का विशेष हस्तक्षेप रहा है। किन्तु स्वतंत्रता के बाद तो भारत की सम्पूर्ण संवैधानिक व्यवस्था में बुद्धिजीवियों तथा पूँजीपतियों का एकाधिकार हो गया है। वैसे तो दुनिया के अन्य अनेक देशो में भी ऐसा है किन्तु भारत में तो यह स्थिति विशेष रुप से दिखती है। बुद्धिजीवियों ने सबसे पहले बेरोजगारी शब्द की परिभाषा बदल दी। आज बेरोजगारी की क्या परिभाषा है, यही अब तब स्पष्ट नहीं है। कहा जाता है कि योग्यतानुसार कार्य का अभाव बेरोजगारी है। प्रश्न उठता है कि एक श्रमिक भूख की मजबूरी में 100 रु में कहीं दिनभर काम कर रहा है,और एक इन्जीनियर 500 रु प्रतिदिन में भी काम न करके बेरोजगार बैठा है क्योकि 500 रु प्रतिदिन उसकी योग्यता की तुलना में बहुत कम है। सच्चाई तो यह है कि एक सीमा से नीचे श्रम मुल्य पर काम करने वाले मजबूर श्रमिक को बेरोजगार माना जाये तथा उससे उपर प्राप्त करने की प्रतिक्षा में बेरोजगार बैठे इन्जीनियर को बेरोजगार न मानकर उचित रोजगार की प्रतिक्षा में माना जाये। किन्तु बुद्धिजीवियों ने धुर्ततापूर्वक रोजगार की ऐसी परिभाषा बना दी कि मजबूरी में काम कर रहे को रोजगार प्राप्त तथा उचित रोजगार की प्रतिक्षा में बैठे को बेरोजगार घोषित कर दिया। बेरोजगारी की वर्तमान भ्रमपूर्ण परिभाषा को बदलने की जरुरत है। किसी स्थापित व्यवस्था द्वारा घोषित न्युनतम श्रम मुल्य पर योग्यतानुसार कार्य का अभाव ही बेरोजगारी की ठीक परिभाषा हो सकती है। किन्तु मैं जानता हूँ कि इस परिभाषा को न बुद्धिजीवी स्वीकार करेंगे,न ही सरकार।

व्यक्ति के भरण पोषण के लिए तीन माध्यम होते है– 1 शारीरिक श्रम 2 बुद्धि 3 धन। श्रम तो सबके पास होता है किन्तु बुद्धि प्रधानता कुछ लोगों के पास होती है तथा धन प्रधानता तो और भी कम लोगों के पास होती है। एक व्यक्ति के पास जीवनयापन के लिए सिर्फ श्रम है। दूसरे के पास श्रम और बुद्धि भी है। तीसरे के पास श्रम बुद्धि और धन भी है । मैं आज तक नहीं समझा कि शिक्षित बेरोजगार कैसे माना जा सकता है क्योंकि उसके पास तो श्रम और बुद्धि दोनों रहना प्रमाणित है। सच्चाई यह है कि बुद्धिजीवियों ने श्रम शोषण के लिए चार सिद्धांत बनाये है–1 कृत्रिम उर्जा मुल्य नियंत्रण 2 शिक्षित बेरोजगारी को मान्यता 3 श्रम मुल्य वृद्धि की सरकारी घोषणाएँ 4 जातीय आरक्षण। स्पष्ट है कि भारत की बुद्धि प्रधान अर्थव्यवस्था श्रम शोषण के लिए चारों सिद्धांतो पर पूरी इमानदारी से अमल करती है। यह स्पष्ट है कि न्यायपूर्ण तरीके से बेरोजगारी दूर करने का एकमात्र माध्यम है, श्रम की मांग बढे किन्तु हमारे देश के आर्थिक विशेषज्ञ सारी शक्ति लगाकर श्रम की मांग नहीं बढने से रोकने का प्रयत्न करते रहते है। 70 वर्ष की स्वतंत्रता के बाद भारत दुनिया के देशों से आर्थिक प्रतिस्पर्धा की चुनौती दे रहा है। तो दूसरी ओर भारत में आज भी ऐसे बेरोजगारों की संख्या करीब 15 प्रतिशत है, जो 30रु प्रतिदिन से कम पर अपना गुजारा करने के लिए मजबूर है। आज भी भारत सरकार ने 5 व्यक्ति को परिवार मानकर 160 रु प्रतिदिन का न्यूनतम श्रममूल्य घोषित किया है। किन्तु इस श्रम मूल्य पर भी सरकार सबको रोजगार की गारण्टी नहीं दे पा रही। मुझे जानकारी है कि सरकारी बेरोजगारों की सूची में ऐसे वास्तविक बेरोजगारों का नाम शामिल नहीं है। दूसरी ओर इस सूची में उन सब लोगों के नाम शामिल है जो उचित रोजगार की प्रतिक्षा में काम करने के अभाव में घर बैठे है।

श्रम की मांग बढे बिना न तो बेरोजगारी दूर हो सकती है, न ही न्यायपूर्ण अर्थव्यवस्था कही जा सकती है। यदि भारत सरकार वास्तव में वास्तविक बेरोजगारी को दूर करना चाहती है तो उसे कृत्रिम उर्जा की भारी मूल्यवृद्धि कर देनी चाहिए। साथ ही उसे शिक्षा पर लगने वाला पूरा खर्च बंद करके कृषि की ओर स्थानान्तरित कर देना चाहिए। तीसरी बात यह भी है कि उसे श्रम के वास्तविक मूल्य से अधिक बढाकर घोषणा

नहीं करनी चाहिए। क्योंकि एक मान्य सिद्धांत है कि किसी वस्तु का मूल्य बढता है तो मांग घटती है और मांग घटती है तो मूल्य घटता है। जब श्रम मूल्य वृद्धि की घोषणा होती है तथा उस वृद्धि के अनुसार रोजगार की गारण्टी नहीं होती, तब दो प्रकार के श्रम मूल्य प्रचलित हो जाते है। ऐसी स्थिति में श्रम की मांग घटती है और बेरोजगारी बढती है।

मेरे विचार से बेरोजगारी की परिभाषा बदल देनी चाहिए। कृत्रिम उर्जा की मूल्यवृद्धि कर देनी चाहिए तथा भारत की अर्थव्यवस्था पर बुद्धिजीवियों के एकाधिकार को समाप्त कर देना चाहिए। तब भारत बहुत कम समय में ही बेरोजगारी से मुक्त होने का दावा कर सकेगा। जब तक भारत में वास्तविक बेरोजगारी है, तब तक हमारी कितनी भी आर्थिक उन्नति,हमारी सर गर्व से उंचा करने में बाधक बनी रहेगी।

नोटः– मंथन का अगला विषय संघ परिवार,आर्य समाज और सर्वोदय परिवार की समीक्षा होगा।

मंथन कमांक 3 –संघ परिवार,आर्य समाज और सर्वोदय परिवार की समीक्षा

स्वतंत्रता पूर्व स्वामी दयानंद द्वारा स्थापित आर्य समाज, श्री हेडगेवार, तथा महात्मा गॉधी लगातार भारत की आतंरिक ,राजनैतिक, सामाजिक व्यवस्था के सुधार में सकिय रहे। तीनों ही संगठनों में एक से बढकर एक त्यागी ,तपस्वी लोग शामिल रहे, किन्तु तीनों संगठनों का कुछ मामलों में तालमेल नहीं हो सका। आर्य समाज मुख्य रुप से सामाजिक समस्याओं पर अधिक केन्द्रित रहा। आर्य समाज भावनाओं की अपेक्षा विचारों पर अधिक बल देता था। आर्यसमाज परिस्थिति अनुसार अपनी कार्यप्रणाली में संशोधन भी करता था। यही कारण था कि आर्य समाज ने स्वतंत्रता संघर्ष में सामाजिक कार्यो की अपेक्षा गुलामी से मुक्ति आन्दोलन में अधिक बढ़ चढकर हिस्सा लिया। आर्य समाज के बहुत से लोग गॉधी के मार्ग से भी जुडे रहे, तो दूसरी ओर बहुत से लोग गॉधी मार्ग से ठीक विपरीत कांतिकारियों के साथ भी जुडे रहे। मार्ग भले ही भिन्न भिन्न हो किन्तु लक्ष्य दोनों का स्वतंत्रता में सहयोग था। हेडगेवार जी तथा उनके द्वारा स्थापित संघ हिन्दू सुरक्षा तक सीमित था। संघ के लोग इस्लाम को हिन्दू धर्म के लिए सबसे ज्यादा खतरनाक मानते थे और यह भी सच था कि मुसलमान राजाओं का इतिहास ऐसा ही कलंकित रहा है। मुसलमानों की अपेक्षा संघ परिवार अंग्रेजी शासन को कम खराब मानता था और इसलिए संघ परिवार की एकमात्र सम्पूर्ण शक्ति इस्लाम के विरुद्ध हिन्दू संगठन तक केन्द्रित रही। महात्मा गॉधी राष्ट्रीय गुलामी को सर्वाधिक खतरनाक मानते थे। यह अलग बात है कि स्वतंत्रता संघर्ष में महात्मा गॉधी अहिंसक मार्ग पर चलने के लिए दृढ थे, तो कांतिकारी अहिंसक मार्ग को असफल मानते थे। लेकिन लक्ष्य के प्रति दोनों के बीच कोई विरोधाभास नहीं था। महात्मा गॉधी तथा कातिकारी इस्लाम की अपेक्षा गुलामी को पहला शत्रु मानते थे , तो संघ परिवार इस्लाम को पहला शत्रु मानता था। आर्य समाज भी इस्लाम को पहला शत्रु मानना बंद करके गुलामी को पहला शत्रु मानने लगा था। यही कारण है कि आर्य समाज प्रारंभ में इस्लाम के पूरी तरह विरुद्ध होते हुए भी स्वतंत्रता संघर्ष के समय उस विरोध को प्राथमिकता नहीं दे रहा था। यही कारण था कि गॉधी पूरी तरह हिन्दू धर्म के पक्षधर होते हुए भी स्वतंत्रता संघर्ष में इस्लाम को साथ लेकर चलना चाहते थे और संघ परिवार स्वतंत्रता भले ही देर से मिले या न भी मिले किन्तु वह इस्लाम से किसी भी प्रकार के समझौते के विरुद्ध था। यही कारण है कि संघ के इक्कादुक्का लोगों को छोडकर अन्य किसी कार्यकर्ता की स्वतंत्रता संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं रही। बल्कि कहीं कहीं इस संघर्ष को विवादास्पद बनाने में भी सकियता देखी जा सकती है।

स्वतंत्रता के बाद आर्य समाज ने यह मान लिया कि उसका काम पूरा हो गया और उसे अब पुनः अपने समाज सुधार के कार्य में लग जाना चाहिए और उसने पूरी तरह राजनीति से किनारा कर लिया। इसके ठीक विपरीत स्वतंत्रता के पूर्व संघ एक सांस्कृतिक संगठन तक सीमित था, किन्तु स्वतंत्रता मिलते ही वह पूरी तरह राजनीति में सकिय हो गया। स्वाभाविक था कि अधिकांश मुसलमान भारत के हिन्दुओं में अपना विश्वास खो चुके थे तथा संघ के लिए यह अच्छा अवसर था। यह अलग बात है कि संघ विचारों से प्रभावित कुछ अतिवादी हिन्दुओं ने गॉधी हत्या जैसा भावनात्मक और मूखर्तापूर्ण कृत्य करके उसका खेल बिगाड दिया। गॉधी हत्या के बाद सर्वोदय दो भागों में विभाजित हो गया। गॉधी को मानने वालो का एक भाग राजनीति के माध्यम से व्यवस्था परिवर्तन में लग गया जो बाद में अपनी अवस्था परिवर्तन में बदल गया, तो दूसरा सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन तक सीमित हो गया।

दुनिया में साम्यवादी सबसे अधिक चालाक और बुद्धिवादी माने जाते है, तो दूसरी ओर संघ परिवार सबसे अधिक शरीफ नासमझ और भावना प्रधान। सर्वोदय भी लगभग शरीफ नासमझ और भावनाप्रधान ही माना

जाता है। किन्तु गॉधी हत्या ने सर्वोदय के मन में इतनी कटुता भर दी कि साम्यवादी और मुस्लिम संगठनों को सर्वोदय का साथ लेने में सुविधा हो गई। यदि हम सर्वोदय परिवार और संघ परिवार की तुलना करें तो दोनों में अनेक समानताओं के बाद भी दोनों में काफी असमानताएँ हैं। संघ एक संगठन का स्वरूप है जिसके नेता निर्णय करते हैं और कार्यकर्ता तदनुसार आचरण करते हैं। जबकि सर्वोदय का प्रत्येक कार्यकर्ता ही स्वयं में एक नेता है इसमें न तो एक नेतृत्व है, न ही प्रतिबद्ध अनुकरण कर्ता। संघ में पूरी तरह अनुशासन है तो संर्वोदय में पूरी तरह स्वशासन। संघ का एक स्पष्ट लक्ष्य है हिन्दू तुष्टीकरण के माध्यम से भारतीय राजनीति में निर्णायक भूमिका अदा करना। सर्वोदय दिशा हीन है। उसका कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं। कभी भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन तो कभी स्वदेशी का नारा। कभी ग्राम स्वराज्य तो कभी साम्प्रदायिकता उन्मूलन। एक वर्ष के लिये भी इनके लक्ष्य टिकाऊ या स्पष्ट नहीं होते। संघ मुस्लिम संगठनों की किया के विरूद्ध तीव्र योजनाबद्ध तथा परिणाम मूलक प्रतिकिया करता है। सर्वोदय संघ की प्रतिकिया के विरूद्ध लचर अविचारित तथा शक्ति प्रदर्शन के लिये प्रतिकिया करता हैं। संघ अन्य संगठनों का उपयोग करना जानता है जबकि सर्वोदय किसी संगठन का उपयोग नहीं कर सकता भले ही उसी का कोई उपयोग कर ले। संघ नेतृत्व पूरी तरह सतर्क सकिय और चालाक है। सर्वोदय नेतृत्व सकिय तो है किन्तु ढीला ढाला तथा शरीफ प्रवृति का है। संघ का उद्देश्य सत्ता प्रधान है, और परिणाम सफलता है जबकि सर्वोदय का उद्देश्य जनहित का है किन्तु परिणाम शून्य है।

मैंने दोनों संगठनों को निकट से देखा है। सर्वोदय की प्रत्येक चर्चा में गांधी हत्या की प्रतिकिया महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सर्वोदय गांधी हत्या के लिए तो संघ को अक्षम्य दोषी मानता है किन्तु भारत विभाजन में मुसलमानों की भूमिका अथवा सम्पूर्ण विश्व में अन्य धर्मावलम्बियों से निरंतर टकराव में मुसलमानों की भूमिका को भूल जाने योग्य दोष से अधिक नहीं मानता। संघ प्रत्यक्ष रुप से बलप्रयोग का समर्थक है। उसकी कथनी करनी में फर्क नहीं। सर्वोदय प्रत्यक्ष रुप से अहिंसा की बात करता है किन्तु परोक्ष रुप से नक्सलवाद मुस्लिम आतंकवाद तक का समर्थन करता है। कथनी और करनी में आसमान जमीन का फर्क है।

मेरे विचार में सर्वोदय भटक रहा है। सन पचहत्तर में सर्वोदय ने इंदिरा गांधी की तानाशाही के विरूद्ध एक निर्णायक पहल की। किन्तु सर्वोदय से भूल हुई कि उसने उक्त पहल करने में संघ तथा साम्यवादियों को मिलाकर एक मंच बना दिया। संघ और साम्यवादी उतने ही कट्टर होते है जितने कि मुसलमान। ये व्यक्ति के रूप में तो कहीं भी रह सकते हैं किन्तु दल के रूप में ये पूरी तरह सतर्क और सकिय रहते हैं। सर्वोदय ने तानाशाही के विरूद्ध ऐतिहासिक संघर्ष का नेतृत्व किया किन्तु देश में कोई निर्णायक परिर्वतन नहीं आ सका। अब तो सर्वोदय लगभग चर्चा से भी बाहर हो रहा है। इस समापन काल में स्थिति यहॉ तक आ गई है कि सर्वोदय में ही सम्पत्ति और सत्ता की छीनाझपटी शुरु हो गई है। साम्यवाद के लगभग पतन और कांग्रेस के कमजोर होने के बाद सर्वोदय के सामने कोई अन्य मार्ग नहीं दिख रहा है जबकि संघ परिवार लगातार सशक्त हो रहा है तथा मुसलमानों की बढती अविश्वसनीयता संघ परिवार को और शक्ति प्रदान कर रही है। आर्य समाज की एक स्पष्ट दिशा रही है किन्तु अग्निवेश द्वारा साम्यवाद के समर्थन से आर्य समाज को भी कमजोर करने में बहुत सफलता मिली। यहॉ तक कि साम्यवाद कांग्रेस तथा कुछ विश्व स्तरीय संगठनों के समर्थन से अग्निवेश जैसे चालाक व्यक्ति आर्य संस्कारों के विरुद्ध होते हुए भी आर्य समाज के प्रधान बन बैठे थे।

पिछले दो वर्षो से स्थितियॉ बदली है वर्तमान समय में अधिकांश भावना प्रधान लोगो से भारतीय राजनीति का पिण्ड छूट गया है। तीनों संगठन अर्थात् सर्वोदय, आर्य समाज और संघ, मोदी के सामने समझदारी में बौने सिद्ध हो रहे है। साम्यवाद तो स्वयं ही समाप्त हो रहा था । आर्य समाज का आंशिक स्वरुप परिवर्तन होकर कुछ गायत्री परिवार, कुछ बाबा रामदेव के रुप में बिखर गया। संघ परिवार लगातार शक्तिशाली हो रहा है। स्पष्ट दिखता है कि परिवारवाद मुस्लिम साम्प्रदायिकता तथा आर्थिक कमजोरी से निपटते ही नरेन्द्र मोदी साम्प्रदायिकता से निपटने की पहल करेंगे। हो सकता है कि इस पहल की शुरुवात 2019 के आम चुनाव के बाद ही हो। किन्तु मुझे साफ दिखता है कि यह कार्य होगा अवश्य और ऐसी पहल का मुख्य निशाना संघ परिवार

के वे बडबोले लोग और वह ना समझ विचार होगा जिन्हें न हिन्दुत्व का ज्ञान है, न समाज की चिंता है, न विश्वसनीयता की चिंता है बल्कि उन्हें तो अपने मुर्खतापूर्ण विचारों को टी बी और अखबारों में प्रसारित होने देने की तक चिंता है। मैं भारत में संगठनात्मक हिन्दुत्व की तुलना में गुणात्मक हिन्दुत्व के होने का पक्षधर रहा हूँ। मैं उम्मीद करता हूँ कि आर्य समाज तथा सर्वोदय भी वैचारिक तथा गुणात्मक हिन्दुत्व के समर्थन में अपनी पुरानी गलतियों की समीक्षा करेंगे।

नोटः– मंथन कमांक 4 का अगला विषय विश्व की प्रमुख समस्याएँ और समाधान होगा।

मंथन कमांक 1 की समीक्षा

अभ्युदय द्विवेदी जी

प्रश्नः–1) क्या राज्य संगठन एवं शक्ति के बिना भी न्याय और सुरक्षा दे सकता है। अधिकार व शक्ति में क्या अंतर है?

2) यदि राज्य न्याय और अधिकार का अपना दायित्व न पूरा करें तो समाज क्या कर सकता है?

भूपत शूट

3) समाज से आपका अभिप्राय क्या है?

अन्य प्रश्न

4) क्या प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार समान होते है या कम ज्यादा?

5) राज्य कभी सम्प्रभुता सम्पन्न नहीं हो सकता। क्या यह कहना उचित है?

6) क्या यह कहना उचित है कि राज्य न्याय और सुरक्षा के लिए सत्य और अहिंसा की बलि चढा सकता है? गॉधी जी ने राज्य को न्यूनतम बलप्रयोग की सलाह दी थी?

7) क्या समाज किसी परिस्थिति में असत्य और हिंसा का सहारा नहीं ले सकता? स्वतंत्रता संघर्ष में अनेक लोगों ने हिंसा का सहारा लिया और हम उन्हें पूजते है?

8) राज्य व्यक्ति की स्वतंत्रता की कोई सीमा नहीं बना सकता। तो बताइये कि ऐसी सीमा कौन बना सकता है? यदि कोई सीमा नहीं रही तो उच्श्रृंखलता तथा अराजकता का खतरा है।

उत्तरः–1) अधिकार शब्द स्वयं में भ्रम मूलक है। अंग्रेजी में राईट शब्द के लिए भी अधिकार शब्द का प्रयोग होता है तथा पावर के लिए भी। मेरे विचार से हिन्दी में भी अधिकार और शक्ति को अलग अलग होना चाहिए। व्यक्ति या समाज राज्य को शक्ति देता है क्योंकि दायित्व के पूरा करने के लिए शक्ति अनिवार्य है। आज तक कोई ऐसा मार्ग नही खोजा जा सका जिसमें शक्ति भी स्थानांतरित न हो तथा दायित्व पूरे किये जा सकें।

2) जब राज्य अपना दायित्व पूरा न कर सके अथवा न करना चाहे तो ऐसी परिस्थिति में समाज ऐसे राज्य में परिवर्तन कर सकता है। यदि राज्य उच्श्रृंखल हो जाये अर्थात् तानाशाह हो जाये तब समाज आपातकाल समझकर अराजक भी हो सकता है। ऐसी स्थिति में समाज अहिंसा और सत्य की भी बलि चढा सकता है।

3) समाज का एक ही अर्थ होता है मानव समाज या विश्व समाज। परिवार ,गांव,राष्ट्र,महादेश आदि समाज के टुकडे होते है, प्रकार नहीं। समाज कई प्रकार का नहीं हो सकता । यदि समाज शब्द के आगे हिन्दू,मुसलमान,व्यापारी भारतीय आदि शब्द लगे हो तो ये समाज के अंग हो सकते है,समाज नहीं।

4) व्यक्ति के अधिकार तीन प्रकार के होते है–1 प्राकृतिक 2 संवैधानिक 3 सामाजिक। प्राकृतिक अधिकार प्रत्येक व्यक्ति के समान होते है। प्राकृतिक अधिकारों में किसी भी परिस्थिति में किसी प्रकार का कोई भेद नहीं किया जा सकता। संवैधानिक अधिकार कम ज्यादा भी हो सकता है। सामाजिक अधिकार तो कम ज्यादा होते ही है।

5) राज्य व्यवस्था की कोई प्रारंभिक इकाई नहीं है और न ही राज्य व्यवस्था की अंतिम इकाई है। व्यवस्था की इकाईयां परिवार,गॉव,जिला राष्ट्र, प्रदेश से आगे बढती बढती विश्व व्यवस्था तक जाती है। प्रत्येक इकाई अपनी सीमा में सम्प्रभुता सम्पन्न होती हैं किन्तु प्रत्येक इकाई अपनी सीमा से बाहर उपर की इकाई की पूरक होती है। राज्य के साथ भी यही परिभाषा लागू होती है। राज्य भी अपने अधिकारों की सीमा में सम्प्रभुता सम्पन्न हो सकता है किन्तु अपनी सीमा से बाहर वह अधिकार विहीन होता है।

6) गॉधी जी ने जो कुछ कहा उस समय की परिस्थितियॉ भिन्न थी। यह भी संभव है कि गॉधी जी ने ऐसा कहकर गलती की हो तथा यदि वे जीवित रहते तो गलती सुधार लेते। राज्य को न्यूनतम हिंसा का मार्ग छोड़कर समुचित

हिंसा का मार्ग अपनाना चाहिए। भारत में समाज में बढती हिंसा की प्रवृत्ति का यह मुख्य कारण है कि राज्य ने समुचित हिंसा के स्थान पर न्यूनतम हिंसा का मार्ग अपनाया, यह मार्ग गलत था। गाधी जी की सलाह के बाद भी गलत था।

7) सन् 47 के पहले भारत गुलाम था। गुलामी के काल में असत्य और हिंसा का सहारा लिया जा सकता है किन्तु स्वतंत्रता के काल में नहीं। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने जो कुछ असत्य और हिंसा का मार्ग अपनाया वह गुलामी काल का होने से सम्मान जनक है। किन्तु स्वतंत्रता के बाद यदि वे जीवित होते तो या तो ऐसा नही करते या यदि करते तो गलत करते।

8) स्वतंत्रता की सीमा व्यक्ति स्वयं बनाता है। यह सीमा उस सीमा तक बनाई जा सकती है जहॉ से किसी दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमा न शुरु होती हो। यदि ऐसी सीमाओं में किसी तरह का टकराव होता है तो राज्य की भूमिका शुरु हो जाती है तथा वह दोनों की सीमाओं की सुरक्षा करता है। इन दोनों इकाईयों की सीमाओं की सुरक्षा ही वास्तव में न्याय है।

नोटः—मंथन कमांक दो के संबंध में कोई प्रश्न प्राप्त नहीं हुआ

मंथन कमांक तीन का प्रश्नोत्तर

1 ओम प्रकाश दुबे, नोएडा

1 प्रश्न— गुणात्मक हिन्दुत्व और सनातन हिन्दुत्व मे क्या फर्क है?

उत्तर—गुणात्मक हिन्दुत्व और सनातन हिन्दुत्व का आशय एक ही है किन्तु गुणात्मक हिन्दुत्व और संगठनात्मक हिन्दुत्व अलग अलग होते हैं। दुनिया मे हिन्दू एक मात्र समूह है जो मूलतः किसी भी रूप मे संगठन पर विश्वास नही करता। दूसरी ओर इस्लाम अकेला समूह है जो सिर्फ संगठन पर ही विश्वास करता है। गांधी, आर्य समाज, गायत्री परिवार आदि की सोच धार्मिक कही जा सकती है। इनकी धर्म की व्याख्या गुण प्रधान है। संघ परिवार इस्लाम साम्यवाद की सोच संगठनात्मक है, धार्मिक नहीं। इनकी व्याख्या पहचान प्रधान होती है। गांधी ,आर्य समाज, गायत्री परिवार आदि हिन्दुत्व की पहचान जीवन पद्धति से मानते हैं जिसमे सहजीवन, सर्वधर्म समभाव, वसुधैव कुटुम्बकम का भाव महत्वपूर्ण रहता है; अहिंसा और सत्य को महत्वपूर्ण माना जाता है; दूसरी ओर संगठनात्मक हिन्दुत्व मे चोटी धोती गाय गंगा मंदिर को अन्य गुणो की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। गुणात्मक हिन्दुत्व का नेतृत्व ब्राम्हण प्रवृत्ति प्रधान विचारको के हाथ मे होता है तो संगठनात्मक हिन्दुत्व का नेतृत्व क्षत्रिय प्रवृत्ति प्रधान राजनेताओ के हाथ मे। गुणात्मक हिन्दुत्व संख्या विस्तार को महत्वहीन मानता है, तो संगठनात्मक हिन्दुत्व संख्या विस्तार को पहली प्राथमिकता मानता है।

2प्रश्न आजादी के बाद संघ का राजनीति मे आने का उददेश्य मुसलमानो को रोकना मात्र था या कुछ और?

उत्तर— संस्था हमेशा समाज के साथ जुडकर रहना चाहती है और संगठन हमेशा सत्ता के साथ जुडकर। संघ एक संगठन है संस्था नही। संघ उग्रवादी विचारो का रहा है आतंकवादी नहीं । किन्तु उग्रवादी विचारो मे से आतंकवाद पैदा होता है । प्रारंभ मे यदि आतंकवाद को उग्रवाद ने नही रोका तो वही उग्रवाद का काल बन जाता है । ऐसा ही साम्यवाद के साथ हुआ है, ऐसा ही इस्लाम के साथ हो रहा है तथा ऐसा ही संघ के साथ भी होना संभव है। स्वतंत्रता के बाद पाकिस्तान बंट चुका था तब कोई कारण नही था कि स्वतंत्र भारत मे गांधी का इतना विरोध हो किन्तु संघ परिवार, जिसकी सदस्य हिन्दू महा सभा भी थी, इन सबने मिलकर स्वतंत्रता पूर्व गांधी की ऐसी विपरीत छवि बना दी थी की वे इतने कम समय मे उन धारणा को बदल नही सके। मेरे विचार से संघ और हिन्दू महासभा की कार्य प्रणाली अलग अलग थी । संभव है कि गांधी हत्या मे हिन्दू महासभा की कार्य प्रणाली का समावेश हो। आज भी दोनो की कार्यप्रणाली मे फर्क देखा जा सकता है।

स्वतंत्रता के बाद भी यदि संघ ने गांधी का विरोध जारी रखा होगा तो वह विरोध राजनैतिक कारणो से हो सकता है, इस्लाम समर्थन के कारण नही क्योकि पाकिस्तान बंट चुका था। इस्लाम उस समय भारत की प्रमुख समस्या नही था। गांधी संघ के राजनैतिक प्रतिद्वंदी कभी नहीं थे किन्तु नेहरू संघ के प्रतिद्वदी

रहे और नेहरू जी गांधी जी की छत्र छाया मे ही थे । मै नही कह सकता कि संघ नेतृत्व की वास्तविक सोच क्या रही होगी।

2 राहुल शर्मा मुरैना म0प्र0

प्रश्न– यदि मोदी जी दो हजार उन्नीस के पूर्व संघ परिवार को नाराज कर दें तो चुनावों पर क्या प्रभाव पड सकता है?

उत्तर–संघ परिवार और इस्लाम की कार्य प्रणाली लगभग एक समान है। ये कभी भी किसी मजबूत शक्ति के विरूद्ध एक जुट हो सकते है। वर्तमान समय मे नरेन्द्र मोदी को कई अलग अलग ताकतो से लडना है। मोदी विरोधी मुहबाये खडे हैं कि कोई उनके साथ आ जाये, भले ही वह राष्ट विरोधी या समाज विरोधी ही क्यो न हो । इनमे से कई लोग तो पाकिस्तान तक की वफादारी करते देखे जा सकते हैं, साम्प्रदायिक मुसलमानो की चापलूसी मे तो सभी एक दूसरे को पछाडने में लगे ही है। ऐसे अवसर पर न तो नरेन्द्र मोदी संघ को नाराज करना चाहेंगे न ही ऐसा करना उचित है। इसलिए नरेन्द्र मोदी जी के लिए यही उचित होगा कि पहले अपराध वाद, परिवारवाद, साम्यवाद और मुस्लिम आतंकवाद को निपटा ले उसके बाद जैसी परिस्थिति होगी वैसा कदम उठाना चाहिए।

3 डी सी सरण शिमला

प्रश्न–संघ परिवार की सबसे बडी कमी है कि भारत की तीन जातियों को छोडकर लगभग 95 प्रतिशत लोगो को संघ यह विश्वास कभी नही दिला पाया कि यह संगठन आपका है। आप कही भी सर्वे कर ले तो आपको यह सच्चाई मिल जाएगी।

उत्तरः– मेरे विचार में संघ एक साम्प्रदायिक संगठन है, जातिवादी नहीं। संघ हिन्दु परिवार की जातियों के टकराव के विरुद्ध है। यह अलग बात है कि वह हिन्दू समाज के अंदर व्याप्त उच नीच छूआ छूत गरीब अमीर के भेद भाव दूर करने जैसे सामाजिक कार्य को कम महत्व देकर इस्लाम से टकराव को अधिक महत्व देता है। इस्लाम और साम्यवाद हिन्दू धर्म के अंतर्गत भेद भाव उच नीच को अधिक हाइलाइट करके इसे मुख्य मुददा बनाते है। भाजपा को छोडकर अन्य राजनैजिक दलो को यह अंदर तक विश्वास हो गया कि हिन्दू कभी संगठित नही हो सकता जबकि मुसलमान तो जन्म से मृत्यु तक संगठित ही रहता है। यही कारण है कि सभी राजनैतिक दलो ने मुसलमानो और साम्यवादियो को इतना सिर पर चढा लिया कि आज संघ परिवार के समर्थन से मोदी सरकार चल रही है। यह सही है कि कभी भी संघ को हिन्दूओ का व्यापक समर्थन नही मिला किन्तु वह भी सही है कि लाचारी मे हिन्दूओ को संघ समर्थन का जहर का घूट पीना पडा और आज यह समर्थन निरंतर बढता ही जा रहा है।

4 सोनू देवरानी दिल्ली

प्रश्न–संघ परिवार ,आर्य समाज और सर्वोदय परिवार अंततः समाज सशक्तिकरण मे ही लगे हुए है और भविष्य में भी लगे रहेंगे। क्या तीनो एक साथ आ सकते है।

उत्तर– शरीफ लोग कभी स्वयं संचालित नहीं होते। शराफत के कंधे पर ही चढकर धूर्तता आगे बढती है। ये तीनों शरीफ प्रवृत्ति के है जिसके परिणाम स्वरुप तीनों ही कुछ चालाक लोगो के हाथों में खेलते रहते है। संघ परिवार तो किसी अन्य के हाथों में न खेलकर स्वयं ही राजनैतिक मोह जाल में फसा हुआ है । आर्य समाज स्वामी अग्निवेष के चक्रव्यूह से नही निकल पा रहा। सर्वोदय परिवार भी साम्यवाद और इस्लामिक कटटरवाद के चंगुल में अंदर तक फसा हुआ है। ऐसी स्थिति में तीनो के एक साथ आने की संभावना न के बराबर है। मैंने कुछ प्रयत्न किया था किन्तु संघ परिवार और सर्वोदय के लोगो ने अस्वीकार कर दिया।

संघ परिवार युद्ध उन्मादी प्रवृत्ति का माना जाता है तो सर्वोदय परिवार कायरों की जमात। न हेडगेवार कभी युद्ध उन्मादी रहे न ही गॉधी कभी कायर प्रवृत्ति के। लेकिन दोनों के जाने के बाद दोनों की दिशा बदल गयी।

5 सुरेश कुमार नोएडा

प्रश्न–क्या संघ के अतिरिक्त विश्व पर इस्लामिक खतरे को लेकर कोई अन्य संगठन भी चिंतित है? इस्लाम के मानव विरोधी चरित्र को रोकने का उपाय क्या है? हम संघ का आंख मुदकर समर्थन क्यो न करे।

उत्तर– जिस समय संघ की स्थापना हुई थी उस समय भारत मे इस्लाम सर्वाधिक खतरनाक माना जाता था। संघ का निर्णय समयोचित था। यदि मै भी होता तो हो सकता है कि मै उस निर्णय का समर्थन करता। किन्तु बहुत बाद मे जब स्वतंत्रता संघर्ष चरम पर था तब संघ को अल्प काल के लिये अपनी योजना को स्थगित करना चाहिये था। संघ की कार्य प्रणाली अस्पष्ट है, नीयत नही । संघ को चार पांच प्रश्नो पर विचार करना चाहिये। 1 संघ राष्ट और हिन्दुत्व का घालमेल क्यो करता है? धर्म प्रमुख है या राष्ट यह बात साफ होनी चाहिये। 2 मनुष्य के प्राकृतिक अर्थात मौलिक अधिकारो के विषय मे संघ की नीति क्या है? 3 संघ इस्लाम को भारत तक के लिये खतरनाक मानता है या विश्व स्तर के लिये? 4 सारी दुनियां मे इस्लाम एक बडा शक्ति शाली संगठन है। संघ सिर्फ शक्ति प्रयोग तक ही उसका समाधान सोचता है अथवा साम दाम और भेद का उपयोग भी आवश्यक मानता है। 5 संघ हिन्दूत्व के मूल तत्व सहजीवन धर्म निरपेक्षता वसुधैव कुटुम्बकम सर्व धर्म समभाव तथा गाय गंगा मंदिर आदि मे से किसे अधिक महत्वपूर्ण मानता है।

मैरे विचार से संघ यदि मिल बैठकर इन प्रश्नो का स्पष्ट उत्तर खोज ले तो संघ इस्लाम का एक उपयुक्त समाधान हो सकता है।

अन्य प्रश्न

1 प्रश्न– क्या मुस्लिम राजाओ का इतिहास इतना कलंकित रहा है कि उन्हे राष्ट्रीय गुलामी की तुलना मे अधिक महत्वपूर्ण खतरा माना जाय?

उत्तर– अधिकांश मुस्लिम राजाओ का इतिहास उससे भी अधिक कलंकित रहा है जो सीमा हम समझते है। पुराना इतिहास क्या रहा उसे तो भूल जाइये किन्तु वर्तमान मे भी पाकिस्तान मे इश निंदा के लिये पत्थर मारने का रिवाज और फांसी देने का कानूनी प्रावधान यह प्रमाणित करता है कि जब मुसलमान भारत के शाासक थे तो वे किस सीमा तक मुल्ला मौलवीयो से डरते होगे। आज भी मुस्लिम महिलाओं मे इतनी हिम्मत नही आयी है, कि वे इन मुल्ला मौलवीयों का खुलकर विरोध कर सकें । इसलिये मुस्लिम राजाओ के अत्याचार की कहानियां अतिरंजित होते हुए भी सत्य जैसी महसूस होने लगती है।

2 प्रश्न– आप कैसे कह सकते है कि संघ अंग्रेजी शासन के पक्ष मे था?

उत्तर – स्वामी दयानंद और विवेकानंद लगभग समकालीन रहे होगे । स्वामी दयानंद ने अंग्रेजी शासन का आंशिक विरोध करते हुए स्वराज्य की बात कही किन्तु स्वामी विवेकानंद ने नहीं कही। स्वामी दयानंद के शिष्यो ने समाज सुधार का तथा मुस्लिम विरोध का काम रोककर स्वतंत्रता संघर्ष मे भाग लिया। किन्तु संघ परिवार ने स्वतंत्रता संघर्ष से दूरी बनाकर इसके ठीक विपरीत हिन्दु मुसलमान मे टकराव बढाने का ही काम किया। आज तक 70 वर्ष बीतने के बाद भी संघ के लोग स्वतंत्रता को उतना महत्व नही देते जितना विभाजन को गाली देते है। संघ परिवार विभाजन की कीमत पर स्वतंत्रता का पक्षधर कभी नही रहा बल्कि यदि गृह युद्ध होता तो संघ परिवार उसमे भी सहमत हो जाता और गृह युद्ध के माध्यम से अंग्रेजो की इच्छा पूरी कर देता। अर्थात स्वतंत्रता और कुछ वर्षो के लिये टल जाती।

3 प्रश्न– आपने लिखा है कि गांधीवादियो का एक भाग सुधार मे लग गया और दूसरा अवस्था परिवर्तन मे। अवस्था परिवर्तन शब्द को अधिक स्पष्ट करे । क्या समाज सुधार मे लगे लोगो का मार्ग ठीक था?

उत्तर भारत के स्वतंत्र होते ही तथा गांधी हत्या के तत्काल बाद सत्ता लोलुप गांधी वादियों और सामाजिक गांधी वादियों की संयुक्त बैठक सेवाग्राम मे हुई। बैठक मे समाज सेवियो को सत्ता लोलुप लोगो के समझा दिया कि आप समाज सुधार कीजिये और हम व्यवस्था परिवर्तन करेंगे । ये विचारे अपना झोला डंडा उठाकर ग्राम सुधार मे लग गये और राजनेताओ को खुला छोड दिया कि वे चाहे जितना भ्रष्टाचार करे, चाहे जिस सीमा तक समाज को गुलाम बनालें । किसी गांधी वादी ने कभी यह नही सोचा कि गाय की रोटी कुत्ता खा रहा है और हम गांधीवादी पूरी इमानदारी से गाय के लिये आटा पीसने मे आंख पर पटटी बांधकर निरंतर सकिय है। यहा तक कि जय प्रकाश जी ने जब प्रयत्न भी किया तो गांधी वादी दो फाड हो गये । वाद मे ठाकुर दास जी बंग सिद्ध राज ढढ्ढा ने प्रयत्न किया तो अधिकांश गांधीवादियों ने एक जुट होकर

उनका विरोध किया । क्योकि उन्हे कुत्ते और गांय से कुछ लेना देना नही था। उन्हे तो गाय के लिये इमानदारी के आटा पीसना था। भले ही कुत्ता खाता रहे।

4 प्रश्न– संघ नेतृत्व पूरी तरह चालाक सकिय सतर्क और सफल है जबकि सर्वोदय का ढीला ढाला शरीफ असफल दूसरी ओर आपने ही पहले भाग मे संघ के लोगो को शरीफ और भावना प्रधान लिखा है । बाद मे विपरीत क्यो?

उत्तर– मैने संघ के लोगो को शरीफ भावना प्रधान लिखा है और नेतृत्व को चालाक। मेरी दोनों ही बाते सही है। सर्वोदय मे नेत्त्व नही होता, जबकि संघ मे नेतृत्व होता है। संघ एक पूरी तरह अनुशासित संगठन है जबकि सर्वोदय मे उपर से नीचे तक अनुशासन कही देखने को भी नही मिलेगा। इसलिये मेरा यह मानना है कि संघ मे शासक और शासित की कार्य प्रणाली है जो सर्वोदय मे नही है। शासक यदि चालाक नही हो तो वह न तो कभी अनुशासन कायम कर सकता है न ही वह सफलता की ओर बढ सकता है। संघ पूरी तरह अनुशासित है और सफलता की ओर बढ रहा है। इसलिये मेरे विचार मे शरीफ और चालाक लिखना उपयुक्त प्रतीत होता है।

1.समाचार

समाचार है कि भारतीय कलाकार सलमान खान ने एक बयान देकर पाकिस्तान के कलाकारों के भारत में किये जा रहे प्रदर्शन के विरोध की आलोचना की है तथा यह तर्क दिया है कि कला को राजनीति से दूर रखना चाहिए।

मैंने इस पर विचार किया। मैं भी इस बात से सहमत हूॅ कि कला और राजनीति अलग अलग विषय होने चाहिए। किन्तु मैं वर्तमान परिस्थिति और उस परिस्थिति में भी किसी मुस्लिम कलाकार के द्वारा की गई, इस तरह की टिप्पणी को अनावश्यक और अनुचित मानता हूॅ । मैं प्रायः कश्मीर समस्या को इस्लामिक आतंकवाद की समस्या मानता रहा हूॅ तथा पाकिस्तान के प्रति मेरी सहानुभूति भी रही है किन्तु पिछले कुछ महिनों से जिस तरह पाकिस्तान ने कश्मीर को अशांत किया, उससे मेरी रही सही सहानुभूति भी खत्म हो गई, और मैं युद्ध उन्माद के पूरी तरह विरुद्ध होते हुए भी पाकिस्तान को कोई कडा संदेश देने का पक्षधर बन गया। ऐसी परिस्थिति में किसी भारतीय मुसलमान की ऐसी टिप्पणी उचित नहीं कहीं जा सकती।

यह सच है कि इस्लाम कोई धर्म न होकर एक संगठन मात्र बन गया है। अपने संगठन की ताकत पर भारतीय मुसलमानों ने भी 67 वर्षो तक भारतीय शासन व्यवस्था को ब्लैकमेल किया किन्तु अब परिस्थितियॉ बदल गई हैं। सलमान खान को यह सोचना चाहिए कि सारी दुनियॉ में मुसलमान संदेह के घेरे में हैं। दुनिया के मुसलमानों में भी पाकिस्तान सर्वाधिक आतंक समर्थक माना जा रहा है। पाकिस्तान के भी सुन्नी मुसलमान विशेष रुप में संदेह के घेरे में है। सलमान खान कोई बोहरा,सूफी अथवा अन्य ऐसे मुसलमानों की श्रेणी में नहीं है जिन्हें घोषित रुप से शांतिपूर्ण माना जाये। ऐसे कट्टरवादी समूह का मुसलमान होते हुए भी सलमान खान ने कोई ऐसी विशेष छवि नहीं बनाई थी जिसके कारण उन्हें अपवाद स्वरुप माना जाये। ऐसी परिस्थिति में सलमान खान ने यह बयान देकर एक गंभीर गलती की है। इस गलती ने ही शिवसेना सरीखे साम्प्रदायिक हिन्दूवादी संगठन को कुछ बोलने का मौका दिया अन्यथा साम्प्रदायिक हिन्दुओं का धीरे –धीरे मूॅह बंद हो रहा था।

मैं फेसबुक में देखता रहा हूॅ कि आमतौर पर मुसलमान ऐसे संवेदनशील मुद्दों पर क्या टिप्पणी करते है। मुझे कभी कभी अपवाद स्वरुप ही किसी मुसलमान की ऐसी टिप्पणी मिलती होगी जो इस्लामिक कट्टरवाद के विरुद्ध हो। मुसलमान नाम आते ही आभास हो जाता है कि उसने क्या लिखा होगा। वर्तमान वातावरण में इन टिप्पणी कर्ता मुसलमानों को चुप क्यों नहीं रहना चाहिए। समय बदल चुका है। अब आप संगठन की ताकत पर सारी दुनिया को ब्लैकमेल नहीं कर पायेंगे। रोते हुए बच्चे को कई बार मॉ अन्य बच्चों की अपेक्षा दूध अधिक पिला दिया करती है किन्तु यदि ऐसा रोना उसकी आदत बन जाये तो मॉ उसे जोरदार झापड़ भी मार देती है। दुनिया के मुसलमानों को और विशेषकर भारतीय मुसलमानों को इस उदाहरण से सबक लेना चाहिए। कश्मीर तो भारत से कभी अलग नहीं हो सकेगा। कहीं ऐसा न हो कि पाकिस्तान ही कश्मीर में मिलकर भारत का अंग बन जावे।

भारत के मुसलमानों को यह तय करना होगा कि वे 125 करोड़ की आबादी में एक व्यक्ति के समान समान अधिकार चाहते है,अथवा अल्पसंख्यक समूह के समान विशेष अधिकार। यदि आप अपने को अल्पसंख्यक मानते है तो आपके लिए आवश्यक है कि आप बहुसंख्यकों के भी विशेष अधिकार स्वीकार करे। यह आपको तय करना है कि आप क्या चाहते है। बहुसंख्यक दोनों परिस्थितियों में जीने के लिए तैयार है और आप एक साथ दोंनो परिस्थितियों का लाभ उठाना चाहते है जो अब संभव नहीं।

2. समाचार है कि प्रसिद्ध कलाकार ओमपुरी ने सलमान खान प्रकरण में कुछ भिन्न विचार देते हुए कहा है कि पाकिस्तान की अधिकांश जनता भारत के आम नागरिकों से प्रेम करती है तथा अच्छे संबंध बनाकर रखना चाहती है।

मैंने ओमपुरी जी के कथन पर विचार किया। पाकिस्तान एक मुस्लिम बहुल मुस्लिम राष्ट्र है। जबकि भारत हिन्दू बहुल,धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र। पाकिस्तान की मुस्लिम बहुल जनता ने पाकिस्तान से अधिकांश हिन्दुओं को भगा दिया। साथ ही वहॉ के अनेक मुसलमान भी ,चोरी छिपे, खतरे उठाकर भी, भारत में प्रवेश करने के प्रयत्न करते रहे। स्पष्ट होता है कि उनका भारत के नागरिको से खास लगाव है। दूसरी ओर पाकिस्तान के लोग भारत की भूमि को काटकर पाकिस्तान में मिलाने के लिए भी संघर्षरत हैं। पाकिस्तान के आम नागरिक कश्मीर की भूमि को पाकिस्तान में मिलाना चाहते है। मैं स्पष्ट हूॅ कि यदि भारत अपनी सीमायें खोल दे तो पाकिस्तान के आधे मुसलमान भारत में आ जायेंगे। साथ ही यदि भारत अपनी सीमाओं की रक्षा में कमजोर हो तो पाकिस्तान के मुसलमान अधिक से अधिक भारत की भूमि को पाकिस्तान में मिलाना चाहेंगे। इन दोनों स्थितियों की यदि निरपेक्ष समीक्षा की जाये तो मुस्लिम बहुल पाकिस्तान के लोग अपने को शिकारी मानते है और हिन्दू बहुल भारत को शिकार। वे लोग कश्मीर को इस तरह समझते है कि जैसे शिकारी शिकार के उददेश्य से कुछ चारा बांधकर रखता है।

मैं सलमान खान ,उनके पिता, ओमपुरी सहित अन्य समर्थक कलाकारों से जानना चाहता हूॅ कि क्या पाकिस्तान की जनता का भारत प्रेम शिकारी और शिकार जैसा नहीं है? अपने व्यवसायिक हितों के लिए सामाजिक हितों की बलि चढाना सलमान खान के लिए तो क्षम्य हो सकता है किन्तु ओमपुरी के लिए नहीं।

समाचार

3. मेरे पारिवारिक मित्र तथा पडोसी मदन प्रसाद गुप्ता की पुत्री दीपा गुप्ता का विवाह आंध्रप्रदेश में हुआ हैं। दीपा गुप्ता वहॉ एक प्रतिष्ठित प्रोफेसर है तथा विख्यात कवियत्री भी है। दीपा गुप्ता को महाकौशल,साहित्य एवं संस्कृति परिसर म0प्र0 द्वारा जबलपुर में उसकी कविताओं के लिए भारत भारती सम्मान से सम्मानित किया गया। मुझे भी अपने परिवार की इस सदस्य के सम्मानित होने पर प्रसन्नता है। सम्मान परियोजना का विवरण इस प्रकार है–

महाकौशल साहित्य एवं संस्कृति परिषद् म0प्र0/छ0ग0
भारत–भारती सारस्वत सम्मान 2016
मुख्य अतिथि –माननीय जस्टिस,नन्दिता दुबे, न्यायाधिपति म0प्र0 उच्च न्यायालय
अध्यक्ष– माननीय प्रो0 कपिल देव मिश्र, कुलपति,रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,जबलपुर
सारस्वत अतिथि– माननीय डॉ आर एस शर्मा, कुलपति म0प्र0 मेडिकल विश्वविद्यालय जबलपुर के कर कमलो द्वारा भारत भारती सम्मान से सम्मानित
प्रोफेसर डॉ0 दीपा गुप्ता,
एम0वी0आर0 महाविद्यालय,विशाखापट्नम,आन्ध्रप्रदेश को सादर समर्पित
दीपावली सप्तंक

सुरगुंजित सुरगुजा की,दीपा सुरभित गन्ध।
काव्य सरोवर में खिला,अमल कमल मकरन्द।।
'दीपा' दीप समान ही, हरती तम अज्ञान।
शिक्षक के आदर्श सी, वाणी का वरदान।।
स्वर्ण किरण ज्यों भोर की, सरसिज की मुस्कान।
सत्य और शिव सुन्दर,'दीपा' के प्रतिमान।।
'दीपा' दिव्य प्रकाश की, ज्योति–पुंज अभिराम।
हिन्दी–हिन्दुस्तान हित,संकल्पित हैं प्राण।।
सृजनमयी कल्याणमय, 'दीपा' ज्ञान प्रकाश।
काव्य–जगत में फिर जगा एक नया विश्वास।
विद्यापति सी सरसता, तुलसी जैसी भक्ति।
'दीपा' जी के काव्य में मीरा की अनुरक्ति।।
दीपशिखा दीपा लगे,सामदेव का गान।
'दीपा' का सम्मान तो सरस्वती–सम्मान।।

(प्रोफेसर डॉ दिनेशदत्त चतुर्वेदी)
अध्यक्ष/संयोजक

प्रश्नोत्तर

1. सत्यपाल शर्मा,नवीनगर,बरेली,उ0प्र0

प्रश्न– 18 सितंबर को कश्मीर में चार आतंकवादियों ने हमारे 17 जवानों की हत्या कर दी। यह ऐसी क्षति है जिसे भुलाया नहीं जा सकता है? भारत 60 साल से पाकिस्तान के बर्बर आतंकवाद झेल रहा है जब कोई बडी घटना होती है तब भारत के नेता गरजते तडपते है और निंदा करके खामोश बैठ जाते हैं। आतंकवादी जान गवाने आते हैं और हमें अपनी जान प्यारी है इसलिए निंदा करके अपनी भडास निकाल कर खामोश बैठ जाते है। पाकिस्तान कूर राक्षस है जिस पर निंदा कर कोई प्रभाव नहीं पडता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मीठी बाते करने में माहिर हैं उनमें साहस शौर्य का अभाव है।

पाकिस्तान प्रायोजित आतंकी संगठनों से निपटने में बयानवाजी निरर्थक है। अमेरिका श्रेय का पात्र है जिसने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर आतंकी हमला कराने वाले इराक को नेस्तोनाबूद कर दिया और आतंकी ओसामा विन लादेन को पाकिस्तान में मार गिराया। आतंकवाद से निपटने के लिए कठोर प्रभावी निर्णय लेना चाहिए।

उत्तर:–आपका 19 सितंबर का पत्र 1 अक्टूबर को मिला। तब तक परिस्थितियॉ बहुत बदल चुकी थी। फिर भी मेरा यह मत है कि ऐसे संवेदनशील मुददों पर जो विश्व व्यवस्था से जुडे हो तथा जिनके विषय में हमें सत्यता का पर्याप्त ज्ञान न हो उन पर हमें कोई टिप्पणी या सलाह नहीं देना चाहिए। विशेषकर मेरी यह बात उस समय अधिक गंभीर हो जाती है जब ऐसे विषय पर निर्णय करने के लिए हमारे पास विश्वसनीय राजनेता का नेतृत्व हो तथा ऐसा विषय गंभीर प्रभाव डालने वाला हो। यही कारण है कि मैं इस मामले में लगभग चुप रहा।

अमेरिका ने ईराक या पाकिस्तान में जो कुछ किया वैसा भारत को करना चाहिए या नहीं यह भारत की अपनी शक्ति तथा विश्व परिस्थितियों पर निर्भर करता है। इसलिए ऐसे मुददों पर भावना प्रधान विचार देना कोई अच्छी बात नहीं। कब हमें चुप रहकर प्रतिक्षा करनी चाहिए तथा कब हमें कायरता त्यागकर प्रभावी निर्णय लेना चाहिए, यह निर्णय उपर के लोगों पर छोड देना चाहिए।

2. वंशलाल संचान, फतेहपुर उ0प्र0

प्रश्न:–परम्परा यथार्थ के बीच जो समाज में रुढ़िवादिता एवं आधुनिकता रुपी विकृति है उसे समाज से कैसे दूर किया जाय। इस विषय में आपने जो वचार प्रस्तुत किये हैं वे विचारणीय एवं मनन करने योग्य ही नही बल्कि माता पिता भाई बहन एवं समस्त परिवार में सामंजस्य स्थापित कर समाज में शान्तिमय जीवन में भी सहायक है। इस्लाम में मुसलमानों की धार्मिक मान्यता एवं उनके धार्मिक संगठनों में जो दूरी हैं उसे उनमें अलग कर इस्लाम के आंतक को छिन्न भिन्न किया जा सकता है। जो इन विचारों में सहायक है।

उत्तरः– मैंने जो कुछ ठीक लिखा उसका आपने समर्थन कर दिया। आप एक अच्छे विचारक माने जाते है। मैं जो कुछ लिखता हूॅ उसमें बहुत सी बातें अमान्य अथवा प्रश्न करने योग्य भी होती है। मैं चाहता हूॅ कि आप ऐसी अमान्य या प्रश्न करने योग्य बातों का भी उल्लेख करे जिससे मंथन की प्रकिया ठीक गति से चलती रहे।

मंगेश स्वीट दादा,

विचार– मनुष्य जब जन्म लेता है तब वह आस्तिक–नास्तिक शून्य होता है। जैसे–जैसे बडा होता जाता है परिवार से प्राप्त संस्कारों के आधार पर ईश्वर या सर्वोच्च शक्ति का आइडिया मन में बना लेता है।.इस संस्कारी आस्तिकता का रंग बहुत गहरा होता है।. अधिकांश लोगों के पास न तो इतनी बुद्धि होती है और न ही इतना साहस कि इस संस्कारी आस्तिकता से पीछा छुडा सके। इसलिए यदि यह कहा जाए कि अधिकांश मनुष्य संस्कारी आस्तिकता को ढोने के लिए अभिशप्त हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। मनुष्य एक तर्कशील प्राणी है और जब वह प्राकृतिक

घटनाओं और स्थापित विश्वास अर्थात संस्कारी आस्तिकता में विसंगतियों को देखता है तो विश्वास कमजोर होने लगता है। दूसरे शब्दों में वह स्थूल कार्य–कारण सिद्धान्त व सुक्ष्म कर्मफल की गति में संगति में अभाव देखने लगता है। अधिकांश लोग तो हिम्मत नहीं जुटा पाते और यहीं पर रुक जाते हैं लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जो किसी ईश्वर या सर्वोच्च सत्ता के अस्तित्व को अस्वीकार करने लगते हैं। यह एक भ्रम या अनिर्णय की स्थिति होती है जो न आस्तिक होती है न नास्तिक । बल्कि बिलकुल बीच मझधार वाली कही जा सकती है। तर्क बुद्धि जैसे–जैसे विकसित होती जाती है वैसे–वैसे व्यक्ति संस्कारी आस्तिकता को त्यागता चला जाता है और आखिर पूर्ण रूप से त्याग देता है, सांप की कैंचुली की तरह। आम बोलचाल में इसे नास्तिकता की स्थिति कह सकते हैं। जो आस्तिकता की दुहाई देते हैं उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि उनकी आस्तिकता किस दर्जे की है, संस्कारी या अनुभूत ? और जो नास्तिक होने का दंभ भरते है उन्हें भी भान होना चाहिए कि नास्तिकता एक पडाव मात्र है, अंतिम सत्य नहीं ..... सत्य इससे आगे है।

भूपत शूट – आप जो लिख रहे हो वो बात आम आदमी को संबोधित हैं या कि उस विशेष तबके से जो ज्ञान–विज्ञान, साहित्य में खोया रहता हैं तथा जिसके पहुँच में सुख सुविधा के अनेक साधन होते हैं। अगर आम आदमी को भी साथ में लपेटते हो तो बताओ कि आप मनोविज्ञान के बारे में कितना जानते हो ? जो आम गरीब–मेहनतकश व मध्यमवर्गीय व्यक्ति होता हैं उसके पास कितना समय इन सबके लिए होता हैं कि मानव जीवन के रहस्य, इतिहास, उसका क्रमिक विकास आदि को समझे। उसके पास सबसे मजबूत आधार ही वह संस्कार होते हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलते आ रहे हैं। उसको उन बातो व सचाइयो पर पुनः समय जाया करने की जरूरत नहीं जिसे उसके पूर्वजो ने सुलझा लिया था तथा उसके लिए परम्परा, खान–पान, रस्म–रिवाज, तीज–त्यौहार, उठ–बैठ, चाल–चलन, रहन–सहन, पहनावे आदि की पगडंडी बना दी थी। परम्परा व इतिहास की समृद्ध विरासत पर खड़ा आदमी अपने भूत को ही बुनियाद से खारिज करना चाहता हैं तब उसे चाहिए कि जन्म के कुछ समय बाद जब तक कि वह वयस्क नहीं होता तब तक वह बुद्ध की तरह सांसारिकता को छोड़ कर जंगल की तरफ चला जाया व अपने जीवन मूल्य गढ़े.

इस दौर का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह हैं कि मानव अपनी भौतिक सुखसुविधा, संसाधन व निरपेक्ष व्यक्तिगत पहचान तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से लैश होकर अपने इतिहास व भूतकाल के अँधेरे पहलु व पक्ष में भविष्य खोज रहा हैं। वर्तमान मानव के सामने खड़ी बेहद जटिल व कठिन समस्याओ की चुनौतियों को समझने के बजाय वह भविष्य के दिशाबोध को नहीं भांप पा रहा हैं। यह उसकी अकेले की समस्या नहीं होकर लोकतात्रिक समाज की पतंनोंन्मुख प्रवृति की देन हैं।

रोशन लाल अग्रवाल–अपने चिरंतन सुख को पाने के लिए मनुष्य की निरंतर चलने वाली ज्ञान यात्रा के कितने ही पड़ाव कितने ही लोगों द्वारा पार कर लिए जाने के बाद भी अंतिम रहस्य सुलझा पाने में मानव सफल नहीं हो पाया है। समाजशास्त्र मानव मनोविज्ञान आस्तिकता और नास्तिकता के नाम पर संदेहों का पर्दा उठना तो दूर रहा झीना तक नहीं होता।

अंतिम सत्य को समझ लेने की बात यदि मुंह से कोई कह भी रहा हो तो उसको इसलिए विश्वास योग्य नहीं माना जा सकता क्योंकि उसका ज्ञान न तो खुद को संतुष्ट कर पाया है, और ना ही उससे समाज में स्थाई शांति की स्थापना हो सकी है। अपने–अपने विश्वास को सही बताने वाले लोग पहले भी आपस में सिरफुटव्वल कर रहे थे और वही सिर फुटव्वल आज भी जारी है.

जब तक मनुष्य जाति अपने बीच के इस प्रत्यक्ष टकराव को ही अपने ध्यान के द्वारा शांतिपूर्वक सुलझा पाने में सफल नहीं होती तब तक सब लोग अपना अपना राग अलापते रहेंगे लेकिन कोई भी एक दूसरे की बात को हृदय से स्वीकार नहीं कर पाएगा.।

मनोज कुमार परिहार

मेरा मानना है कि नास्तिकता स्वयं में एक निरपेक्ष स्थिति है।

आप का नास्तिकता का इस कदर विरोध करना महज आपका दम्भ है। आप का ज्ञान अगर स्वानुभूत है तो ये पूर्णतया पूर्ण है। इसका कोई आधार नहीं है आप के पास क्योंकि जहाँ तक मैं समझ रखता हूँ आप मेरी जानकारी में अब तक के सर्वाधिक दिग्भ्रमित स्वजन लगे हैं।

उत्तर– आस्तिकता और नास्तिकता की बहस लम्बे समय से चल रही है तथा भविष्य मे भी चलती रहेगी। मेरे विचार मे जब प्रकृति की अधिकतम और न्यूनतम शक्ति मनुष्य की कल्पना से भी उपर हो जाये तो ईश्वर का अस्तित्व मान लिया जाता है, चाहे हो या न हो । ब्रम्हांड की अधिकतम दूरी क्या है यह कल्पना संभव नही। इसी तरह अणु परमाणु से भी छोटा अंश कहां तक होगा तथा कितना शक्तिशाली होगा, इसकी भी कल्पना नही हो सकी है। इसलिये मै कल्पना से बाहर किसी शक्ति को स्वीकार कर लेता हूँ। दूसरी बात यह भी है कि व्यक्ति के अंदर किसी अदृष्य शक्ति का भय उसे ठीक मार्ग पर चलाने मे सहायक होता है। यदि यह शक्ति किसी दृष्य इकाई के पास रहे तो ऐसी असीम शक्ति उसे दुरूपयोग करने की ओर भी ले जा सकती है। इस लिये ईश्वर नाम से एक अदृश्य शक्ति की रचना की गई । इस अदृष्य शक्ति का बहुत सार्थक उपयोग हुआ। बाद मे कार्लमार्क्स को ऐसा महसुस हुआ कि इस इश्वरीय शक्ति का दुरूपर्योग हो रहा है। इसलिये उन्होने ईश्वर की जगह राज्य को ही अदृष्य शक्ति के रूप मे स्थापित करने का प्रयत्न किया । किन्तु यह प्रयत्न असफल तो हुआ ही बल्कि इसका बहुत दुरुपयोग भी हुआ। मै समझता हूँ कि लगभग सभी अच्छे विद्वान आस्तिकता को निरर्थक समझते है। किन्तु साथ ही वे यह भी समझते है कि किसी ऐसी अदृष्य शक्ति का अस्तित्व रहना चाहिये। मेरे विचार से आस्तिकता और नास्तिकता के बीच कोई बडी बहस उचित नही । ईश्वर है, किन्तु यदि न भी हो तो समाज के ठीक ठीक संचालन के लिये हमे एक काल्पनिक ईश्वर का निर्माण कर लेना चाहिये।

सर्जिकल स्ट्राइक की एक समीक्षा

आज कल भारत और पाकिस्तान के बीच का टकराव वैसे तो सम्पूर्ण विश्व के लिये चर्चा का विषय बना हुआ है किन्तु भारत और पाकिस्तान के लिये तो सर्वोच्च प्राथमिकता का विषय बन गया है । एक भारतीय होने की स्थिति मे हमे वर्तमान स्थिति की सूक्ष्म विवेचना करनी चाहिये। यही सोचकर मै इस विषय पर अपना मत व्यक्त कर रहा हूँ। पांच प्रश्न विचारणीय है–

1 क्या सर्जिकल स्ट्राइट हुई?
2 क्या विपक्ष के कुछ राजनेता गलत कर रहे है?
3 क्या भाजपा के लोगो द्वारा इस घटना का लाभ उठाने का प्रयत्न गलत है?
4 मुझे इस मामले मे सत्य और न्याय का पक्ष लेना चाहिये या राष्ट्र भावना का।
5 कश्मीर प्रकरण मे यदि पाकिस्तान गलत है तो किस तरह?

1. मै इस संबंध मे कुछ कहने की स्थिति मे नही हूँ क्योकि इस संबंध मे मै स्वयं तो कुछ जानता नही तथा बताने मे दोनों ही देशों की सरकारे या जनता राष्ट्रवाद की भावना मे उबलने के कारण विश्वसनीय नहीं हैं। आजकल असत्य को सत्य के समान स्थापित करने के इतने साधन और झूठे साक्ष्य उपलब्ध है कि विश्वास पूर्वक कुछ कहना कठिन है। फिर भी मै एक भारतीय होने के नाते इस घटना को सत्य मानकर चल रहा हूँ।

2 भारतीय राजनीति का स्तर बहुत गिरा हुआ होने से विपक्ष के ऐसे रवैये को गलत नही कह सकते थे किन्तु सर्जिकल स्ट्राइक का मुददा राजनीति से उपर उठकर राष्ट्रीय स्तर ग्रहण कर लेने के कारण विपक्ष के कुछ लोगो का आचरण गलत दिखता है। यह प्रश्न सर्जिकल स्ट्राइक को सत्य या असत्य होने का न होकर भारत को होने वाले संभावित लाभ हानि से जुडा था। यदि सर्जिकल स्ट्राइक हुई तब भी कोई प्रश्न नही उठता और नही होने के बाद भी ऐसा गलत नही क्योंकि इस स्ट्राइक का बहुत आंदोलन बद्ध प्रचार किया गया और इसके लाभ संभव है। यदि भारत सरकार ने कश्मीर आंदोलन को कमजोर करने के उददेश्य से यह प्रचार किया और सफलता मिली तो यह कदम प्रशंसनीय कहा जायेगा। यदि सरकार ने भविष्य मे कभी सीमा उल्लंघन करने का मार्ग प्रशस्त करने तथा विश्व की प्रतिकिया जानने के उददेश्य से ऐसा असत्य प्रचार किया तब भी यह कदम ठीक है। कुल मिलाकर सरकार ने राष्ट्रहित मे जो कुछ किया उसका आंख मूंदकर सम्पूर्ण विपक्ष को समर्थन करना चाहिये था और प्रारंभ मे तो सबने वैसा किया भी किन्तु दो तीन दिन बाद ही अरविन्द केजरीवाल संजय निरूपम दिग्विजय सिंह राहुल गांधी बनी बनाई खीर मे मक्खी के समान कूद पडे।

दिग्विजय सिंह का एक पक्षीय आतंकवाद प्रेम जगजाहिर है। उन्होने हमेशा ही नक्सलवाद का भी खुलकर समर्थन किया और मुस्लिम आतंकवाद का भी। दिग्विजय सिंह भारतीय आतंकवाद का समर्थन करते करते ओसामा जी तक आगे बढ गये थे। यह सब जानते है। संजय निरूपम कितने कांग्रेसी है और कितने कांग्रेस की जडो मे मठा डालने वाले यह भी कभी तय नही हो सका। निरूपम जी ने पिछले वर्ष ही कांग्रेस और पंडित नेहरू के विरूद्ध अपनी ही प्रत्रिका मे छपे लेख के कारण जो फजीहत कराई थी वह छिपी नही है। कांग्रेस पार्टी अपने गिरते ग्राफ के कारण ऐसी गंदी मंछलियो को भी बाहर करने से बचती रही है। जहां तक राहुल गांधी का प्रश्न है तो वे अब तक ट्रेनिंग काल मे ही है।वैसे तो राहुल गांधी ने कोई बहुत गलत नही कहा था। भाषा और शब्द चयन गलत था। समय भी उपयुक्त नही था। उनका कथन तो ऐसा था कि किसी सामूहिक यज्ञ की आग से कोई व्यक्ति अपने भोजन पकाना शुरू कर दे । किन्तु शब्द चयन गलत होने से भाजपा ने बात का बतंगड बना लिया और राहुल बदनाम हो गये। वैसे भी राहुल गांधी को राजनीति का प्रशिक्षण देना कांग्रेस पार्टी और विशेष कर सोनिया जी के लिये घाटे का सौदा है। प्रवृत्ति से राहुल एक भला आदमी है । कूटनीति की समझ शून्य है। झूठ सफाई से बोलने की क्षमता नही है। राजनैतिक भाषण देते देते जोश का नाटक करने लगते है जो उनके लिये उल्टा पड जाता है। उनमे गांधी बनने की दिशा तो थी किन्तु उन्हे जबरदस्ती सिखा पढा कर नेहरू के समान चालाक बनाया जा रहा है, जो असंभव है। न तो राहुल चरित्रवान विचारक ही बन पायेंगे न ही चालाक राजनेता । उनका जीवन भी बर्बाद और कांग्रेस पाटी भी समाप्त

अरविन्द केजरीवाल की प्रतिकिया बहुत संतुलित और चालाकी भरी भाषा की थी। प्रारंभ मे तो उन्हे प्रशंसा मिली थी किन्तु दो बातो ने उनकी पोल खोल दी। पहली बात तो यह थी कि उन्होने सर्जिकल स्ट्राइक की घोषणा के तीन चार घंटे पूर्व ही लिखा था कि पाकिस्तान नीति के मामले मे सारे विश्व मे पाकिस्तान की तुलना मे भारत ज्यादा अलग थलग हो गया है। उनके बयान के कुछ घंटो बाद ही सर्जिकल स्ट्राइक की घोषणा ने अरविन्द के इस असत्य बयान को ढक दिया किन्तु उनके इस बयान से उनकी नीयत तो स्पष्ट होती ही है । दूसरी बात यह हुई कि पाकिस्तान ने अरविन्द केजरीवाल के इस बयान की इतनी अधिक प्रशंसा कर दी कि अरविन्द की पूरी पोल ही खुल गई। टीम अरविन्द ने बहुत ज्यादा कोशिश की किन्तु पाकिस्तान को तो डूबते को तिनके के सहारे के समान यह बयान मिल गया था। अतः पाकिस्तान ने अरविन्द का साथ छोडा नही और अरविन्द की सारी चालाकी धरी की धरी रह गई।

वैसे तो उपरोक्त सभी नेता राजनीतिज्ञ है कोई विचारक नही । यदि विचारक होते तब बात अलग हो सकती थी किन्तु राजनीतिज्ञ होने के कारण उनके लिये राष्ट्र हित सर्वोच्च होता है। ऐसी स्थिति में राष्ट्रहित से हटकर कोई अन्य प्रतिकिया हमेशा नुकसान करती है और यही आज हो रहा है।

3 आदर्श राजनीति के अनुसार ऐसे मामले दलगत न होकर सर्वदलीय होने चाहिए किन्तु भारतीय राजनीति आदर्श रही ही कब है? सम्पूर्ण विपक्ष पाकिस्तान के मामले मे मोदी सरकार को कायर सिद्ध कर रहा था। छप्पन इंच का सीना सहित अनेक जुमलो को आधार बनाकर मोदी की आलोचना हो रही थी। यदि मोदी नवाज शरीफ से बात भी किये तो अधिकांश विपक्ष ने आलोचना की। मैने कभी नही सुना कि किसी ने भी कभी कठोर कदम न उठ पाने के लिये सेना की कोई आलोचना की हो। कही भी यदि कोई आतंकवादी हमला हुआ तो गालिया या तो मोदी सरकार को मिलती थी या भाजपा को । हर कोई तत्काल टकराव

के लिये उतावला था। अब यदि सर्जिकल स्ट्राइक हुई तो उसका श्रेय मोदी सरकार और भाजपा क्यो नही ले सकती? जब सरकार कमजोरी दिखा रही थी तब यदि सेना की जगह सरकार को गालिया दी जा रही थी तो अब मजबूती दिखाने मे वह प्रशंसित हो तो आपके पेट मे दर्द क्यो ? क्या विपक्ष उस समय आदर्श राजनीति के मार्ग पर था जो आज वह सत्ता पक्ष से उम्मीद कर रहा है।

4.मैं एक विचारक हूॅ, राजनेता नहीं। राजनेता राष्ट्र को सर्वोच्च मानता है और विचारक समाज को। स्वाभाविक है कि मैं राष्ट्र की अपेक्षा समाज को अधिक महत्व देता हूॅ। निरुपम और अरविन्द केजरीवाल ने जो बात कहीं वे अनुचित थीं क्योंकि वे राष्ट्र सर्वोच्च की भावना के प्रति वचनबद्ध हैं। ऐसी ही बातें यदि अन्ना हजारें,प्रशान्तभूषण, मैं अथवा कोई अन्य तटस्थ व्यक्ति बोलता तो गुण दोष के आधार पर समीक्षा होती, गलत नहीं कही जाती क्योंकि ये अन्य लोगों की अपेक्षा कुछ ज्यादा ही न्याय के लिये प्रतिबद्ध माने जा सकते हैं।

फिर भी मैं पाकिस्तान की तुलना में भारत का पक्ष बिना विचारे ठीक मानता हूॅ भले ही किसी घटना विशेष में भारत गलत भी क्यों न हो। इसके कुछ कारण हैं– 1.पाकिस्तान की आबादी का बहुमत मुसलमानों का है जो संगठन को न्याय की तुलना में अधिक महत्व देते हैं दूसरी ओर भारत का बहुमत हिन्दुओं का है जो संगठन की तुलना में न्याय को ज्यादा महत्व देते हैं। 2. पाकिस्तान एक घोषित इस्लामिक राष्ट्र है जबकि भारत घोषित धर्मनिरपेक्ष । 3. पाकिस्तान अनिश्चित लोकतंत्र है। सेना का हस्तक्षेप और भय प्रशासन पर ज्यादा है जबकि भारत निश्चित लोकतंत्र है। यहॉ नागरिक प्रशासन पर सेना हावी नहीं रहती। 4. पाकिस्तान की नीतियॉ आतंकवादियों के दबाव में बनती है जबकि भारत उग्रवादियों तक से नहीं दबता,आतंकवादियों का तो कोई प्रश्न ही नही।

यह तो विचारणीय है कि कश्मीर पर जिस तरह भारत का दावा है, उस तरह पाकिस्तान का दावा नहीं हो सकता। क्योंकि न तो कश्मीर कभी पाकिस्तान का अंग रहा है, न कभी किसी रुप में कश्मीर का पाकिस्तान में विवादास्पद विलय भी हुआ है। सच्चाई यह है कि विवाद तो कश्मीर और भारत के बीच में हो सकता था जिसमें पाकिस्तान कोई पक्ष नहीं हो सकता। पता नहीं यु एन ओ ने पाकिस्तान को किस आधार पर पक्षकार बना लिया।

विचारणीय प्रश्न यह है कि यदि यह निश्चित दिखता हो कि कोई व्यक्ति मजबूत होता है तो कभी न्याय की बात नहीं करता तो ऐसा व्यक्ति यदि कभी अन्याय में भी फंस जावे तो तटस्थों को ऐसे मामले में न्याय अन्याय की बात क्यों करनी चाहिये? न्याय अन्याय की बात दो समान प्रवृति वालों के बीच ही संभव है। गुंडे और शरीफ के बीच या तो शरीफ की सहायता की जायेगी या चुप रहा जायगा। चूॅकि मुसलमान और विशेष कर पाकिस्तान अपना विश्वास खो चुके हैं इसलिए मैं इस संबंध में स्पष्ट हूॅ तथा मेरे विचार में अन्य लोगों की भी राय ऐसी ही है।

5. पाकिस्तान ने पूरे देश से अल्पसंख्यक हिन्दुओं को भगा दिया। पाकिस्तान समर्थक कश्मीरी मुसलमानों ने कश्मीर से भी अल्पसंख्यक हिन्दुओं को भगा दिया। कश्मीर के बहुसंख्यक मुसलमान ऐसे अमानवीय अत्याचार के समय भी चुप रहे। कश्मीर समस्या के न सुलझने का एक महत्वपूर्ण कारण पाकिस्तान की अस्पष्ट नीति है। एक ओर तो पाकिस्तान विश्व बिरादरी से कश्मीर के न्यायपूर्ण समाधान की भी बात करता है तो दूसरी ओर कश्मीर सहित पूरे भारत में आतंकवादी गतिविधियां भी चलाता रहता है। जब आप स्वयं ही लडकर कश्मीर लेने के लिये लगातार सत्तर वर्षों से सकिय हैं तो विश्व विरादरी इस मामले में पहल क्यों करे। या तो आप विश्व बिरादरी पर ही पूरी तरह निर्भर हो जावें अथवा आप सब कुछ छोडकर टकराव का ही मार्ग पकड लें। तोड लें भारत से तब तक सारे संबंध जब तक कश्मीर का निपटारा न हो। कल्पना करिये कि शक्ति संतुलन यदि विपरीत होता अर्थात पाकिस्तान भारत के समान शक्तिशाली होता और भारत कमजोर तब क्या हाल रहता भारत का? इसलिए पाकिस्तान को कश्मीर में टकराव से पहले अपनी विश्वश्नीसता बढानी होगी। पाकिस्तान की यह धमकी कितनी मूर्खतापूर्ण है कि यदि पश्चिम ने पाकिस्तान की अन्देखी की तो पाकिस्तान रुस,चीन की तरफ झुक जायगा।

मेरे विचार से पाकिस्तान को यह बात मान लेनी चाहिये थी कि नियंत्रण रेखा ही सीमा रेखा है। पाकिस्तान कभी भी भारत से इस कश्मीर को नही ले सकता। इसके विपरीत धीरे धीरे ऐसे लक्षण दिखने लगे हैं कि पी ओ के भी उसके हाथ से निकल सकता है। कहीं बलूचिस्तान पर भी आंच न आ जावे। पाकिस्तान को यह पता होना चाहिए कि अब भारत की नीतियॉ भारतीय मुसलमानों को प्रसन्न रखने की मजबूरी से प्रभावित न होकर राष्ट्रहित से प्रभावित होती है।

शक्ति प्रयोग के तीन सिद्धांत माने जाते हैं 1 जब आपके मौलिक अधिकार का उलंघन होता हो। 2 आपको न्याय मिलने का कोई अन्य मार्ग उपलब्ध न हो। 3 जब जीतने की पूरी संभावना दिखती हो। कश्मीर

कभी पाकिस्तान का निर्णायक भाग नहीं रहा। वह एक स्वतंत्र देश था जिसने अपना विलय भारत के साथ किया। दूसरी बात यह है कि अब भी उसका मामला संयुक्त राष्ट्र संघ में लंबित है किन्तु पाकिस्तान ने कभी संयुक्त राष्ट्र पर पूरा विश्वास नहीं किया। तीसरा यह कि वह युद्ध में भारत से कभी जीत नहीं सकता। शक्ति प्रयोग की तीनों शर्तों के पूरी होने के बाद ही शक्ति प्रयोग की बात सोचना उचित होता है किन्तु पाकिस्तान तीन में एक भी शर्त पूरी न करते हुए भी युद्ध के लिये मचलता है तो यह उसकी मूर्खता ही मानी जायेगी।